10/ 01/ 77 की अव्यक्त वाणी
पर आधारित योग अनुभूति
जैसा लक्ष्य वैसा लक्षण बनने का अनुभव

➢➢ स्मृति स्वरूप स्थिती का अनुभव

➳ _ ➳ संगमयुग की ब्राहमण स्वरूप

→ स्वयं भगवान मुझ आत्मा की पालना करते हैं
→ रोज पढ़ाते हैं
→ मुक्ति, जीवन-मुक्ति की वर्सा देते हैं
→ शूद्र से ब्राहमण बना दिया
→ मुझे अपना बच्चा बना दिया
→ अपने गुण और शक्तियों से भरपूर किया
■ कितनी भाग्यशाली आत्मा हूँ मैं
■ अब मैं आत्मा सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य की स्मृति में रह स्मृति स्वरूप बन रहीं हूँ

➳ _ ➳ मै रुहानी पांडव सेना की रुहानी सैनिक हूँ

→ रुहानी सुप्रीम कमांडर से ट्रेनिंग ले रही हूँ
→ माया रुपी शत्रु से बचा रही हूँ
→ श्रीमत रुपी नियम कायदों पर चल रही हूँ
→ सुप्रीम कमांडर बाबा मुझ आत्मा को सुबह-सुबह रुहानी यात्रा पर ले जाते है
■ मैं आत्मा फरिश्ता बन सूक्ष्म वतन में यात्रा करती हूँ , बाप-दादा की रुहानी दृष्टि से पवित्र बन जा रही हूँ परमधाम

➳ _ ➳ परमधाम में पावरहाउस के सामने बैठ जाती हूँ

→ अपने बाबा के साथ मिलन मना रही हूँ
→ रंग-बिरंगी किरणें मुझ आत्मा पर पड़ रहा है
→ पवित्र बना रही हूँ
→ सर्व बोझ मुझ से निकाल दिया
→ मुझ आत्मा के आलस्य, अलबेलेपन, पुराने सभी स्वभाव संस्कार ख़त्म होते जा रहे हैं

➳ _ ➳ शक्ति स्वरूप स्थिति

→ प्यारे बाबा मुझे
→ रंग-बिरंगी गुण, शक्तियों की मालाओं से सजा रहे है
→ मैं आत्मा सर्व गुण, शक्तियों के खजानों से भरपूर अनुभव कर रही हूँ
→ सर्व भुजाधारी शक्ति स्वरूप स्थिति में स्थित हो रही हूँ
→ रावण के 10 शीश का अंत कर रही हूँ
→ क्यों, क्या,कैसे के रावण के सिर को अंश सहित खत्म कर रही हूँ
→ रावण के अभिमान के सिर का नाश कर रावण सम्प्रदाय को खत्म कर चुकी हूँ
■ अब मुझ आत्मा में आसुरी शक्तियों का कोई भी प्रभाव शेष नहीं है
■ सर्व भुजाधारी शक्ति बन गई
■ मैं आत्मा सतयुग, त्रेता में अपने देवी-देवता स्वरूप को देखती हूँ
→ सोने हीरे के महलों,
→ सतोप्रधान प्रकृति,
→ सम्पूर्ण निर्विकारी
→ 16कला सम्पूर्ण
→ डबल ताज
→ सुखी
→ निरोगी
→ मैं खुशी में झूमती हूँ
■ अब मैं आत्मा मंदिरों में भक्तों द्वारा पूजते हुए अपने पूज्य पवित्र स्वरूप को देख हर्षित हो रही हूँ